षष्ठ अध्याय

उपसंहार

षष्ठ अध्याय

उपसंहार

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन आधुनिक हिंदी काव्यके क्षेत्रमें प्रगतिशील विचारधारा के समर्थ कवि हैं। सुमनजी की काव्यसंग्रहोंमें युग की समस्त विचारधाराएँ चित्रित हुई हैं। क्षत्रिय वंश परिहारमें जन्में सुमनजी को अनेक उच्च सन्मान और पुरस्कारोंसे गौरवित किया गया। सुमनजीका बाह्य व्यक्तित्व तो सुंदर हैं ही साथ ही आंतरिक व्यक्तित्व भी उदार, सरल और सुसंस्कृत हैं। उनकी काव्यसंग्रहोंमें राष्ट्रीय आंतरराष्ट्रीय सभी समस्याओंका विश्लेषण किया गया हैं। इसलिए सुमनजीको प्रगतिशील विचारधाराके प्रतिनिधि कवि के रुपमें मानते हैं। सुमन जी की काव्यमें युग की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक परिस्थितियोंका समग्र विवेचन किया गया हैं। सुमनजीने दो प्रकार की कविताएँ लिखी, एक वैयक्तिक, दूसरी सामाजिक।

सुमनजी भारतीय संस्कृति के अभिवक्ता हैं। प्रकृति के रुपरस गंधके चितेरे है, जीवन रसके मादकता के गायक है और परंपरागत गौरव गरिमा के संरक्षक है। उनका यह विशिष्ट रुप काव्यमें प्रतीत होता हैं।

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन प्रगतिवादी विचारधारा के कवि है, इसलिए प्रथम अध्यायमें हमनें प्रगतिवाद उसकी परिभाषा, प्रगतिवादी धारापर मार्क्सवाद का प्रभाव, मार्क्स के द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिक वाद का समग्र विवेचन किया। प्रगतिवाद का हिंदी साहित्यपर प्रभाव, वर्ग संघर्ष संबंधी कल्पना प्रगतिवादी कवियोंकी नारी विषयक भावना, प्रगतिवादी आंदोलनकी पृष्ठभूमि, प्रगतिशील लेखक संघ अधिवेशन, प्रगतिवादी साहित्य की विशेषताएँ, प्रगतिवादी साहित्य का प्रतिफलन आदि का विवेचन किया।

प्रगतिवाद को विश्लेषित करते समय भारतेंदु युगसे लेकर प्रगतिवादी युगतक विवेचन किया। भारतेंदु युग की कृतियों में सामाजिक असंतोष, तथा रुढियों को दूर करने का प्रयास किया गया।

द्विवेदी युगके साहित्यमें काव्यमें सामाजिक प्रश्नोंको स्थान देकर समाज सुधार के पयत्न किये गये।

छायावादी युग कल्पनामय चित्रण का युग रहा। यह व्यक्तित्व के अभिव्यक्ति का काल रहा। इसी समय सुमित्रानंदन पंत ने छायावादी युग समाप्ति की घोषणा की। छायावादी युग समाप्तिके बाद हिंदी साहित्य क्षेत्रमें एक नयी सामाजिक चेतना को लिए जिस काव्य युग की प्रतिष्ठा हुई उसे प्रगतिवाद कहा जाता हैं।

पराधीनता के बंधन से देशको मुक्त करना, देशकी धनहीनता, विषमता, जातिभेद, शोषकोंके प्रति विद्रोह आदि बातोंका विश्लेषण ही प्रगतिवादी साहित्य हैं। प्रगतिवादी साहित्यने छायावादी निराशा, पीड़ा व काल्पनिक जगत् तथा रहस्यमयी भावना के अध्यायको समाप्त कर समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

उसके बाद मार्क्स के पूर्व चिंतक और अन्य चिंतकोंके विचारोंका विश्लेषण किया। वर्गसंघर्ष की कल्पना में किसानोंमें वर्ग चेतना और मजदूरोंके संघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया।

प्रगतिवादी आंदोलन की पृष्ठभूमीमें इस युग को तीन भागोंमें विभाजित किया, प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण।

इसके उपरांत प्रगतिशील लेखक संघ अधिवेशन की जानकारी ली। प्रगतिवादी कवियोंने मजदूर किसानों की तरह नारी को भी शोषित माना इसका विवरण किया।

तदुनंतर प्रगतिवाद की विशेषतायोंको देखकर, प्रगतिवादी साहित्य का प्रतिफ़लन का विवेचन किया। अध्याय के अंतमें प्रगतिवादी कवि और डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन का सामान्य परिचय दिया।

द्वितीय अध्यायमें हमने डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन की व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी ली। डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय का मत हैंकि, सुमन जनता के और उसीके कवि है। सुमनजीने अपनी कवितामें स्त्रोत के रुपमें प्रेम को स्वीकार किया। आगे जाकर प्रेमवियोग की आग ही दुखी जनता के प्रति संवेदनाकी अग्नि और शोषकों के विरुध्द क्रांति में बदल गई। वे स्वभावतः प्रेमी और कर्मतः शिल्पी हैं। बहाव, आवेग और प्रभावित होना उनका धर्म हैं।

डॉ. पभाकर श्रोत्रिय कहते हैंकि सुमनके व्यक्तित्वमें न तो उनकी नफीस उँगलियाँ आकर्षक हैं, न मसृणचर्म उनके झुलते हुए बावरे केश और विशाल देह भी उनका व्यक्तित्व नहीं हैं। सुमन का सारा व्यक्तित्व उनकी आँखोमें है।

सुमनजीके सॉत काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए हैं। प्रथम काव्यसंग्रह 'हिल्लोल' में प्रणयसंबंधी कविताएँ तथा प्रणय और मिलन का आख्यान हैं।

'जीवन के गान' में कविने व्यक्तिगत सीमासे बाहर निकलकर सामान्य जीवन के शोषण, अन्याय के प्रति सहानुभूति प्रकट की।

'प्रलयसृजन' में कविने समाज में व्यापत जातिभेद, वर्ण-वर्गभेद, विषमता के विरुध्द और इन सबकी जड़ पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, सामंतवाद का विरोध किया। इसके अलावा कलकत्ते का अकाल का हृदयद्रावक वर्णन कवि ने किया है और साथ ही सोवियत रूसके प्रति आदरभाव, उसका गुणगान किया हैं।

'विश्वास बढ़ता ही गया' में कविने सामयिक सांप्रदायिक दंगे, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्रीय भावनाओंको व्यक्त किया। यह काव्यसंग्रह सुमनजीकी प्रगतिवादी विचारधाराको अभिव्यक्त करानेमें शीर्षस्थ स्थान रखता हैं। इसके लिए मध्यप्रदेश सरकारने सुमनजी को देव पुरस्कार प्रदान किया। इस संग्रहकी सबसे महान और सशक्त कविता 'जल रहे हैं दीप जलती है जवानी' में राम के जनवादी स्वरुप का तर्कसंगत उद्घाटन किया है। इसके अलावा युगांतरकारी निरालाजीके प्रति अपने श्रध्दाभाव व्यक्त किये।

'पर आँख नहीं भरी' में कविने प्रथम भागमें प्रेमसंबंधी कविताएँ लिखी तो दूसरे भागमें महात्मा गांधी से संबंधित कविताएँ हैं।

कवि को गांधीजीके प्रति अपार आदर है। इन कविताओंको आचार्य नरेंद्र देवने गांधीके प्रति हिंदी की श्रेष्ठ श्रध्दांजलि कहा हैं। इसमें कविने गांधीजीको युगसारथी, अक्षयवट, नीलकंठ, भगीरथ, दधीची के प्रतिरुपमें व्यक्त किया हैं।

'विंध्य हिमालय' में वैयक्तिक कविताएँ हैं। सुमनजी का यह काव्यसंग्रह मालव निवास और नेपाल प्रवास की संचित स्मृतिराशी हैं। इसके साथ प्राकृतिक सौंदर्य तथा, परिवारिक जीवनका चित्रण और मातृवात्सल्य का मर्मस्पर्शी चित्र अंकन किया हैं। इसमें कविके विचार और चिंतनकी नयी दिशायें सामने आती हैं।

'मिट्टी की बारात' यह काव्यसंग्रह छः भागोंमें विभाजित हैं। प्रथम भाग 'पुत्रो अहं पृथिव्या' में सतरह कविताएँ हैं। इस भागकी मुख्य कविता मिट्टी की बारातमें जवाहरलाल नेहरु और उनकी पत्नी कमला के फूलों के सम्मिलित प्रयाण की गौरवगाथा है।

मुक्तसंग समाचार भागमें कसाईखाना नामक कवितामें बुध्द, ईसा, लेनिन, गांधी की अहिंसा तत्व का उदाहरण देके, हिंदी साहित्यके विविध वादोंको अपने कवितामें बध्द किया।

'देवहितंयदायु' में कविने भारत के महान हस्तियों के प्रति अपनी श्रध्दाभावना व्यक्त की हैं।

'आनो भद्राः ऋतवो यन्तु विश्वतः' में मारीशस प्रवास वर्णन है और मारीशस में मैत्री, विश्वास और एकता दिखाई गई हैं।

'हंतोवा प्राप्स्यासि स्वर्गं' में कविने देश की रक्षा के लिए जवानों को बलिवेदीपर मर मिटनेका आवाहन किया है, साथ ही भारतीय संस्कृतिके प्रतीक त्योहारोंका वर्णन किया हैं।

'परिशिष्ट' में वैयक्तिक अनुभूतिपरक कविताओंका चित्रण हैं।

'वाणी की व्यथा' युग की महान उपलब्धि हैं। सुमनजी की बहुमुखी प्रतिभा का यह काव्यसंग्रह प्रतीक है। सामाजिक विषमताओंके प्रति आक्रोश, मानव विकास की प्रेरणा कविता के मुख स्वर हैं।

इसके अलावा सुमनजीने प्रकृति पुरुष कालिदास नामक नाटकमें पौराणिक गाथाओंका संकेत देकर प्रकृति के रम्य चित्रोंको चित्रित किया।

इसके अतिरिक्त द्वितीय अध्यायमें सुमनजी के संकलित रचनाओंके सिर्फ नाम दिये हैं।

तृतीय अध्यायमें कवि सुमनजीके प्रगतिवादी काव्योंका समग्र विवेचन प्रगतिवादी विचारधारा की विशेषताओंके आधारपर किया हैं। सुमनजीकी प्रगतिवादी रचनाएँ जीवन के गान, विश्वास बढ़ता ही गया, प्रलयसृजन, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा मार्क्सवाद प्रभावित सुमनजीने भारतीय की दयनीय अवस्था देखकर सोवियत रुस तथा मार्क्स का गुणगान किया। प्राचीन रुढियाँ रीतिरिवाजों का विरोध किया।

सुमनजीने गरीब असहाय मजदूर दीन-दुखी किसान का शोषण करनेवाले सामंतवादी, पूँजीवादीयोंको नष्ट करनेका महामंत्र जनता को देते है, शोषित पीड़ित वर्ग को क्रांति के लिए प्रेरित करता हैं।

सामयिक समस्याओंमें कलकत्ते का अकाल तथा महात्मा गांधी की नृशंसपूर्ण हत्या का हृदयद्रावक वर्णन किया है। और साहित्यकारोंकी प्रशंसा की हैं।

उपर्युक्त विशेषताओंके कारण डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन का नाम प्रगतिशील कवियोंमें बड़े आदरके साथ लिया जाता हैं। अतः प्रगतिवादी काव्यके विशेषताओंके परिप्रेक्ष्यमें सुमनजी निःसंदेह सफल प्रगतिवादी कवि ठहरते हैं।

चतुर्थ अध्यायमें हमनें डॉ. शिवमंगलसिंह की कविताओंमें शिल्पविधान का समग्र विवेचन किया। भाषिक सर्जनात्मक दृष्टिसे सुमन एक उच्च कोटिके कलाकार हैं। अपनी कविताओंमें हिंदी में प्रचलित सभी छंदोंका प्रयोग किया हैं। उनकी कवितामें मात्रिक छंद, लयात्मक, लयहीन, गेयछंद का सुंदर निर्वाह हुआ हैं।

कवि सुमनने शब्दालंकार और अर्थालंकारोंका ऐसा प्रयोग किया हैंकि, उनके काव्यमें सुंदरता, प्रेषणीयता अपने आप आ जाती हैं। कविने आवश्यकताके नुसार उद्‌बोधनात्मक, व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, संवादात्मक, प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग अपने काव्यमें किया। साथ ही उनकी भाषा के माधुर्य, ओज और प्रसाद गुणोंका प्रयोग प्रसंगानुकूल हुआ हैं।

इसके अतिरिक्त सुमनजीका शब्दभंडारपर पूरा अधिकार हैं। सुमनजीकी कवितामें अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृतके तद्‌भव, तत्सम शब्दका प्रयोग प्रसंगानुसार हुआ हैं। सुमनजीकी भाषा सरल और जनसामान्य की बोली हैं। उनकी भाषामें मधुरता, कोमलपन, तथा सरसता आदि गुण विद्यमान हैं। कवि का काव्य अभिधा शक्ति का प्रवाह हैं। कहीं कहींपर लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग हुआ हैं।

बिंब विधान के अंतर्गत सुमनजीने प्रमुख रुपसे ज्ञानेंद्रिय बिंबोंका सुंदर चित्रण किया हैं।

संक्षेपमें शिल्पगत सर्जना की दृष्टिसे कवि सुमन एक सफल कवि हैं।

पंचम अध्यायमें प्रगतिवादी कवि और शिवमंगलसिंह सुमन का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं। जिसमें नागार्जुन, सुमित्रानंदन पंत, सुर्यकांत त्रिपाठी, निराला, गजानन माधव मुक्तिबोध, केदारनाथ अग्रवाल, रामधारीसिंह दिनकर, रामविलास शर्मा, शमशेर बहादूर सिंह आदि प्रतिनिधि कवियोंसे सुमनजी के कृतित्व की सम्यक तुलना की। निष्कर्षतः सुमनजी प्रगतिवादी धाराके श्रेष्ठ कवि प्रतित होते हैं।

इस तरह हमने प्रगतिवाद, उसकी विशेषता, प्रगतिवादी आंदोलन, प्रगतिशील लेखक संघ अधिवेशन, और प्रमुख प्रतिनिधि प्रगतिवादी कवि और उनमें डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन का व्यक्तित्व एवं उनकी काव्यगत विशेषताएँ तथा शिल्प विधान की विस्तुत चर्चा की।

अतः मेरी यह स्पष्ट धारणा हैंकि, डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन प्रगतिवादी विचारधारा के अक्षय नक्षत्र हैं। उन्हीं के कारण आधुनिक हिंदी काव्यधाराको विशेषतः प्रगतिवाद को लोकप्रियता मिली। डॉ. सुमन के प्रगतिशील विचारोंके कारण समाजमें बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ।

अतः यदि मैं उन्हें युगदृष्टा कवि कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सहायक संदर्भ ग्रंथसूची

	लेखक/संपादक	ग्रंथ का नाम	संस्करण	प्रकाशक
1.	डॉ. अजितसिंह	प्रगतिवादी काव्य उद्भव और विकास	प्रथम संस्करण 1984	साहित्य लोक, कानपुर
2.	अज्ञेय	तारसप्तक	द्वितीय संस्करण 1966	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
3.	डॉ. उपाध्याय भगवतीशरण	कवीश्री शिवमंगलसिंह सुमन	द्वितीय संस्करण 1969	सेतु प्रकाशन, झांसी
4.	कामता प्रसाद गुरु	हिंदी व्याकरण	ग्यारहवा संस्करण	-
5.	श्री. गुप्त मैथिलीशरण	यशोधरा	प्रथम संस्करण 1989	साहित्य सदन, झांसी
6.	डॉ. चतुर्वेदी राजेश्वरप्रसाद	रसदोष छंद अलंकार निरुपण	पंचम संस्करण 1971	प्रकाशन केंद्र, लखनौ
7.	डॉ. झाला दुर्गाप्रसाद	प्रगतिशील हिंदी कविता	प्रथम संस्करण 1967	ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर
8.	डॉ. त्रिवेदी रामप्रसाद	प्रगतिवादी समीक्षा	प्रथम संस्करण	ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर
9.	डॉ. तिवारी तनुजा	प्रगतिशील कविताओंमें सौंदर्य-चिंतन	प्रथम संस्करण 1987	भारतीय भाषा पीठ, नई दिल्ली
10.	डॉ. दीक्षित आनंदप्रकाश	आजके लोकप्रिय हिंदी कवि शिवमंगलसिंह सुमन	प्रथम संस्करण 1972	राजपाल ॲण्ड सन्स,दिल्ली
11.	डॉ. दीक्षित छोटेलाल	आधुनिक काव्यमें सौंदर्य बोधके विविध आयाम	प्रथम संस्करण 1989	शबरी संस्थान, दिल्ली
12.	डॉ. द्विवेदी हजारीप्रसाद	हिंदी साहित्य उद्भव और विकास	द्वितीय संस्करण	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13.	नागार्जुन	प्यासी पथराई आँखे	प्रथम संस्करण 1982	अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद
14.	नागार्जुन	युगधारा	प्रथम संस्करण 1960	--'--
15.	नागार्जुन	तालाब की मछलियाँ	प्रथम संस्करण 1961	--'--
16.	पंत सुमित्रानंदन	संयोजिता	प्रथम संस्करण 1969	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
17.	पंत सुमित्रानंदन	ग्राम्या	सातवाँ संस्करण 1967	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18.	डॉ. पांडे अरविंद	हिंदी के प्रमुख कवि रचना और शिल्प	प्रथम संस्करण 1986	अनुभव प्रकाशन, कानपुर

	लेखक/संपादक	ग्रंथ का नाम	संस्करण	प्रकाशक
19.	पांडि रामजी	सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व कृतित्व	प्रथम संस्करण 1982	नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली
20.	बालसुब्रहमण्यन पी.के.	डॉ.शिवमंगलसिंह सुमन के काव्यमें राष्ट्रीयता	प्रथम संस्करण 1988	पीतांबर प्रकाशन, दिल्ली
21.	भटनागर महेश	गजानन माधव मुक्तिबोध जीवन और काव्य	प्रथम संस्करण 1976	राजस प्रकाशन, दिल्ली
22.	डॉ.मिश्र रवींद्रनाथ	डॉ.शिवमंगलसिंह की कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन	प्रथम संस्करण 1990	साहित्य रत्नाकर, कानपुर
23.	मिश्र शिवकुमार	यथार्थवाद	द्वितीय संस्करण 1978	दि मॅकमिलन कंपनी दिल्ली
24.	मिश्र भगीरथ	काव्यशास्त्र	सप्तम संस्करण 1984	विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी
25.	मुक्तिबोध गजानन माधव	चाँद का मुँह टेढ़ा है	चतुर्थ संस्करण 1975	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली
26.	डॉ. रघुवंश	आधुनिक कवि निराला	प्रथम संस्करण 1979	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
27.	दिनकर रामधारी सिंह	रश्मिरथी	प्रथम संस्करण 1974	उदयाचल प्रकाशन, पटना
28.	दिनकर रामधारी सिंह	नीम के पत्ते	तृतीय संस्करण 1963	--''--
29.	दिनकर रामधारी सिंह	कुरुक्षेत्र	अठारहवाँ संस्करण 1967	--''--
30.	दिनकर रामधारी सिंह	सामधेनी	1975	--''--
31.	दिनकर रामधारी सिंह	चक्रवाल	प्रथम संस्करण 1956	--''--
32.	रहबर हंसराज	प्रगतिवाद मूल्यांकन	प्रथम संस्करण 1987	विभूति प्रकाशन, दिल्ली
33.	डॉ. रणजीत	हिंदी की प्रगतिशील कविता	प्रथम संस्करण 1971	हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली
34.	वर्मा धीरेंद्र	हिंदी साहित्य शब्दकोश	1953	ज्ञानभांडार प्रकाशन, वाराणसी
35.	शास्त्री उमेश	हिंदी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	प्रथम संस्करण 1979	देवनागर प्रकाशन, जयपूर
36.	डॉ. शर्मा मुरारीलाल सुरस	हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि	प्रथम संस्करण 1986	दिनमान प्रकाशन, दिल्ली

	लेखक/संपादक	ग्रंथ का नाम	संस्करण	प्रकाशन
37.	डॉ. शर्मा भक्तराम	मार्क्सवाद और हिंदी कविता	प्रथम संस्करण 1980	वाणी प्रकाशन, दिल्ली
38.	डॉ. शर्मा हरिचरण	नये प्रतिनिधि कवि	प्रथम संस्करण 1979	पंचशील प्रकाशन, जयपुर
39.	डॉ. श्रोत्रिय प्रभाकर	सुमन:मनुष्य और स्रष्टा	प्रथम संस्करण 1971	कैलास पुस्तक सदन, ग्वालियर
40.	डॉ. सत्यनारायण	नागार्जुन : कवि और कथाकार	प्रथम संस्करण 1991	रचना प्रकाशन, जयपुर
41.	डॉ.सुरेशचंद्र 'निर्मल'	आधुनिक हिंदी काव्य और कवि	प्रथम संस्करण 1976	भावना प्रकाशन, दिल्ली

********0********

डॉ. सुमनजीकी रचनाएँ

	ग्रंथ का नाम	संस्करण	प्रकाशन
1.	हिल्लोल	प्रथम संस्करण	आत्माराम ॲण्ड सन्स दिल्ली
2.	जीवन के गान	प्रथम संस्करण 1991	--'--
3.	प्रलयसृजन	द्वितीय संस्करण 1969	--'--
4.	विश्वास बढ़ता ही गया	द्वितीय संस्करण 1967	--'--
5.	पर आँखे नहीं भरी	प्रथम संस्करण 1987	--'--
6.	विंध्य हिमालय	प्रथम संस्करण 1966	--'--
7.	मिट्टी की बारात	द्वितीय संस्करण 1975	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8.	वाणी की व्यथा	प्रथम संस्करण 1980	--

891.431
JOS
T15521